2 दो कलाकार

क्या आप जानते हैं...

किसी के दुःखों से आहत होकर अपने जीवन को उसके लिए समर्पित कर देना कितनी बड़ी बात है! इतना भारी हृदय रखने वाले को ईश्वर का अवतार समझिए। स्वयं के लिए सभी तो जीते हैं; किन्तु जो दूसरों के लिए भी जीते हैं, सही मायने में वही इनसान कहलाने के हकदार हैं।

प्रस्तुत 'कहानी' दो ऐसी सहेलियों की है जो एक ही कला के रूपों (आन्तरिक और बाह्य) में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन दिखाती हैं। इन्हें देखकर यह तथ्य पूर्णतया स्पष्ट हो जाता है कि असली कला सुन्दर चित्र बनाना नहीं है; बल्कि अनाथ और असहाय बच्चों के व्यक्तित्व का निर्माण कर उन्हें अच्छा मनुष्य बनाना है। वास्तव में श्रेष्ठ कलाकार वही है जो औरों के जीवन को खुशियों के रंगों से सजा दे।

"ए रूनी, उठ" और चादर खींचकर चित्रा ने सोती हुई अरुणा को झकझोरकर उ दिया।

"अरे! क्या है?" आँखें मलते हुए तनिक खिझलाहट भरे स्वर अरुणा ने पूछा। चित्रा उसका हाथ पकड़कर खींचती हुई ले गई और अपने नये बनाये हुए चित्र के सामने ले जाकर खड़ा करके बोली, "देख, मेरा चित्र पूरा हो गया।"

"ओह, तो इसे दिखाने के लिए तूने मेरी नींद खराब कर दी!"

"अरे, जरा इस चित्र को तो देख। न पा गयी पहला इनाम तो नाम बदल देना।"

चित्र को चारों ओर घुमाते हुए अरुणा बोली, "किधर से देखूँ, यह तो बता दे? हजार बार तुझसे कहा है कि जिसका चित्र बनाये, उसका नाम लिख दिया कर, जिससे गलतफहमी न हुआ करे, वरना तू बनाये हाथी और हम समझें उल्लू।" तस्वीर पर आँखें गड़ाते हुए बोली, "किसी तरह नहीं समझ पा रही हूँ कि चौरासी लाख योनियों में से आखिर यह किस जीव की तस्वीर है?"

"तो आपको यह कोई जीव नजर आ रहा है? जरा अच्छी तरह देख और समझने की कोशिश कर।"

नाम है?

"अरे, यह क्या? इसमें तो सड़क, आदमी, ट्राम, बस, मोटर, मकान सब एक-दूसरे पर चढ़ रहे हैं। मानो सबकी खिचड़ी पकाकर रख दी हो। क्या घनचक्कर बनाया है?" यह कहकर अरुणा ने चित्र रख दिया।

"जरा सोचकर बता कि यह किसका प्रतीक है?"

"तेरी बेवकूफी का। आई है, बड़ी प्रतीक वाली!"

"अरे जनाब, यह चित्र आज की दुनिया में 'कन्फ्यूजन' का प्रतीक है, समझी।"

जिस चित्र के लिए चित्रा अरुणा को उठाकर लाई थी, वह वास्तव में किसका प्रतीक था?

"मुझे तो तेरे दिमाग के कन्फ्यूजन का प्रतीक नजर आ रहा है, बिना मतलब जिन्दगी खराब कर रही है।" और अरुणा मुँह धोने के लिए बाहर चली गयी। लौटी तो देखा तीन-चार बच्चे उसके कमरे के दरवाजे पर खड़े उसकी प्रतीक्षा कर रहे हैं। आते ही बोली, "आ गये, बच्चो! चलो, मैं अभी आई।"

"क्या ये बन्दर पाल रखे हैं तूने?" फिर जरा हँसकर चित्रा बोली, "एक दिन तेरी पाठशाला का चित्र बनाना होगा। लोगों को दिखाया करेंगे कि हमारी एक मित्र साहिबा थीं जो बस्ती के चौकीदारों, नौकरों और चपरासियों के बच्चों को पढ़ा-पढ़ाकर ही अपने को भारी पण्डिताइन और समाजसेविका समझती थीं।"

चार बजते ही कॉलेज से सारी लड़कियाँ लौट आईं, पर अरुणा नहीं लौटी। चित्रा चाय के लिए उसकी प्रतीक्षा कर रही थी।

"पता नहीं, कहाँ-कहाँ भटक जाती है, बस इसके पीछे बैठे रहो।"

"अरे, क्यों बड़-बड़ कर रही है? ले, मैं आ गयी। चल, बना चाय। मिलकर ही पिएँगी।"

बस्ती के गरीब बच्चों को कौन पढ़ाता था?

"तेरे मनोज की चिट्ठी आई है।"

अरुणा लिफाफा फाड़कर पत्र पढ़ने लगी। जब उसका पत्र समाप्त हो गया तो चाय पीते-पीते चित्रा बोली, "आज पिता जी का पत्र आया है, लिखा है, जैसे ही यहाँ कोर्स समाप्त हो जाये, मैं विदेश जा सकती हूँ। मैं तो जानती थी, पिता जी कभी मना नहीं करेंगे।"

"हाँ भाई! धनी पिता की इकलौती बिटिया ठहरी। तेरी इच्छा कभी टाली जा सकती है? पर सच कहती हूँ मुझे तो सारी कला इतनी निरर्थक लगती है, इतनी बेमतलब लगती है कि बता नहीं सकती। किस काम की ऐसी कला, जो आदमी को आदमी न रहने दे", अरुणा आवेश से बोली।

"तो तू मुझे आदमी नहीं समझती, क्यों?"

"तुझे दुनिया से कोई मतलब नहीं, दूसरों से कोई मतलब नहीं, बस चौबीस घण्टे अपने रंग और तूलियों में डूबी रहती है। दुनिया में कितनी बड़ी घटना घट जाये पर यदि उसमें तेरे चित्र के लिए आइडिया नहीं तो तेरे लिए वह घटना को महत्त्व नहीं रखती। हर घड़ी, हर जगह, हर चीज में तू अपने चित्रों के लिए मॉडल खोजा करती है। कागज पर इन निर्जी चित्रों को बनाने के बजाय दो-चार की जिन्दगी क्यों नहीं बना देती। तेरे पास सामर्थ्य है, साधन हैं।"

"वह काम तो तेरे लिए छोड़ दिया। मैं चली जाऊँगी तो जल्दी से सारी दुनिया का कल्याण करने के लिए झण लेकर निकल पड़ना।" और चित्रा हँस पड़ी।

तीन दिनों से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। रोज अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़पीड़ितों की दशा बिगड़ जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी। अरुणा सारा दिन चन्दा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह दिया, "तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।"

बाढ़पीड़ितों की मदद लिए अरुणा क्या योग करती थी?

"आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है। मैं भी उसके साथ ही जा हूँ।" चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

शाम को अरुणा चली गयी। पन्द्रह दिन बाद वह लौटी तो उसकी हालत काफी खस्ता हो रही थी। सूरत ऐसी कि आई थी मानो छः महीने से बीमार हो। चित्रा उस समय 'गुरुदेव' के पास गई हुई थी। अरुणा नहा-धोकर, खा-पीकर लगी तभी उसकी नजर चित्रा के नये चित्रों की ओर गयी। तीन चित्र बने रखे थे। तीनों बाढ़ के चित्र थे। जो दृश्य वह आँखों से देखकर आ रही थी, वैसे ही दृश्य यहाँ भी अंकित थे। उसका मन जाने कैसा-कैसा हो गया।

शाम को चित्रा लौटी तो अरुणा को देखकर बड़ी प्रसन्न हुई।

"क्यों चित्रा! तेरा जाने का तय हो गया?"

"हाँ, अगले बुध को मैं घर जाऊँगी और बस एक सप्ताह बाद हिन्दुस्तान की सीमा के बाहर पहुँच जाऊँगी" उल्लास उसके स्वर में से छलका पड़ रहा था। "सच कह रही है, तू चली जायेगी चित्रा! छः साल से साथ रहते-रहते बात मैं तो भूल गई कि कभी हमको अलग भी होना पड़ेगा। तू चली जायेगी तो मैं कैसे रहूँगी?" उदासी भरे स्वर में अरु ने पूछा। लगा जैसे स्वयं से ही पूछ रही हो।

अरुणा और चित्रा कितने सालों से साथ-साथ रह रही थीं?

कितना स्नेह था दोनों में! सारा हॉस्टल उनकी मित्रता को ईर्ष्या की दृष्टि से देखता था।

आज चित्रा को जाना था। अरुणा सवेरे से ही उसका सारा सामान ठीक कर रही थी। एक एक करके चित्रा सबसे मिल आई। बस, गुरु जी से मिलना रह गया था, सो उनका आशीर्वाद ले चल पड़ी। तीन बज गये थे, पर वह लौटी नहीं। पाँच बजे की गाड़ी से वह जाने वाली थी। अरुण ने सोचा वह खुद जाकर देख आए कि आखिर बात क्या हो गई। तभी हड़बड़ाती-सी चित्रा ने प्रवेश किया, "बड़ी देर हो गयी ना। अरे क्या करूँ, बस कुछ ऐसा हो गया कि रुकना ही पड़ा।"

"आखिर क्या हो गया ऐसा, जो रुकना ही पड़ा, सुनें तो।" दो-तीन कण्ठ एकसाथ बोले। "गर्ग स्टोर के सामने पेड़ के नीचे अक्सर एक भिखारिन बैठी रहा करती थी न, लौटी तो देखा कि वह वहीं मरी पड़ी है और उसके दोनों बच्चे उसके

गर्ग स्टोर के सामने कौन बैठी रहती थी?

सूखे शरीर से चिपककर बुरी तरह रो रहे हैं। जाने क्या था उस सारे दृश्य में कि मैं अपने को रोक नहीं सकी। एक रफ-सा स्केच बना ही डाला। बस, इसी में देर हो गई।"

साढ़े चार बजे चित्रा हॉस्टल के फाटक पर आ गई, पर तब तक अरुणा का कहीं पता नहीं था। बहुत सारी लड़कियाँ उसे छोड़ने स्टेशन तक भी गयीं, पर चित्रा की आँखें बराबर अरुणा को ढूँढ़ रही थीं। पाँच भी बज गये, रेल चल पड़ी पर अरुणा न आई, सो न आई।

विदेश जाकर चित्रा तन-मन से अपने काम में जुट गई। उसकी लगन ने उसकी कला को निखार दिया। विदेश में उसके चित्रों की धूम मच गई। भिखारिन और दो अनाथ बच्चों के उस चित्र की प्रशंसा में तो अखबारों के कॉलम के कॉलम भर गए। शोहरत के ऊँचे कगार पर बैठ, चित्रा जैसे अपना पिछला सब कुछ भूल गई। पहले वर्ष तो अरुणा से पत्र-व्यवहार बड़े नियमित रूप से चला, फिर कम होते-होते एकदम बन्द हो गया। पिछले एक साल से तो उसे यह भी मालूम नहीं कि वह कहाँ है। अनेक प्रतियोगिताओं में उसका 'अनाथ' शीर्षक वाला चित्र प्रथम पुरस्कार पा चुका था। जाने क्या था उस चित्र में, जो देखता चकित रह जाता। तीन साल बाद जब वह भारत लौटी तो बड़ा स्वागत हुआ उसका। अखबारों में उसकी कला पर, उसके जीवन पर अनेक लेख छपे। पिता अपनी इकलौती बिटिया की इस सफलता पर बहुत प्रसन्न थे। दिल्ली में उसके चित्रों की प्रदर्शनी का विराट आयोजन किया गया। उद्घाटन करने के लिए उसे ही बुलाया गया।

चित्रा को जिस चित्र पर पुरस्कार मिला था उसका शीर्षक क्या था?

2022.12.2

20.3. STATE/ UT OF ORIGIN	22. CANDIDATE BELONGS TO BORDER DI...
	NO
...NDIDATE BELONGS TO MILITANCY/ NAXAL AFFECTED DISTRICT	
NO	

23. PREFERENCE OF POST FOR CAPF(S)/ ORGANIZATION(S)
B,C,E,A,H,G,F,D
24. HIGHEST EDUCATIONAL QUALIFICATION
INTERMEDIATE/ HIGHER SECONDARY/ 10+2 (2)
25. DETAILS OF QUALIFYING EDUCATION
10TH STANDARD

STATUS	PASSING YEAR	STATE/ UT OF BOARD/ UNIVERSITY	NAME OF BOARD/ UNIVERSITY	ROLL NO	PERCENTAGE	CGPA
PASSED	2020	UTTAR PRADESH	BOARD OF HIGH SCHOOL AND INTERMEDIATE EDUCATION UTTAR PRADESH	1479458	71.33	-

26. DO YOU WANT TO MAKE AVAILABLE YOUR PERSONAL INFORMATION FOR ACCESSING JOB OPPORTUNITY IN TERMS OF DoP&T'S O.M.NO.39020/1/2016-ESTT.(B) DATED 21.06.2016 ?
YES

ADDRESS DETAIL

27. CORRESPONDENCE ADDRESS	28. PERMANENT ADDRESS
VILLAGE SIMIRIYA DISTT LALITPUR	VILLAGE SIMIRIYA DISTT LALITPUR
DISTRICT: LALITPUR	DISTRICT: LALITPUR
STATE: UTTAR PRADESH	STATE: UTTAR PRADESH
PIN: 284402	PIN: 284402
MOBILE NO.: 7388807214	EMAIL ID: thakurjianu54@gmail.com

26. WHETHER PHOTOGRAPH HAS BEEN TAKEN ON OR AFTER 27-JULY-2022?
YES

FEE PAYMENT	AMOUNT	TRANSACTION NO	TRANSACTION DATE
EXEMPTED	-	-	-

उस भीड़-भाड़ में अचानक उसकी भेंट अरुणा से हो गई। 'रूनी' कहकर चित्रा भीड़ की उपस्थिति को भूलकर अरुणा के गले से लिपट गयी।

"तुझे कब से चित्र देखने का शौक हो गया, रूनी?"

"चित्रों को नहीं, चित्रा को देखने आई थी। तू तो एकदम भूल ही गई।"

"अरे, ये बच्चे किसके हैं?" दो प्यारे-से बच्चे अरुणा से सटे खड़े थे। लड़के की उम्र दस साल की होगी तो लड़की की कोई आठ।

"मेरे बच्चे हैं, और किसके। ये तुम्हारी चित्रा मौसी हैं, नमस्ते करो, अपनी मौसी को।" अरुणा ने आदेश दिया।

बच्चों ने बड़े आदर से नमस्ते किया। पर चित्रा अवाक् होकर कभी बच्चों को और कभी अरुणा का मुँह देख रही थी। तभी अरुणा ने टोका, "कैसी मौसी है, प्यार तो कर।" और चित्रा ने दोनों के सिर पर हाथ फेरा प्यार का। अरुणा ने कहा, "तुम्हारी ये मौसी बहुत अच्छी तस्वीरें बनाती हैं, ये सारी तस्वीरें इन्हीं की बनायी हुई हैं।"

"आप हमें सब तस्वीरें दिखाएँ मौसी," बच्चों ने फरमाइश की। चित्रा उन्हें तस्वीरें दिखाने लगी। घूमते-घूमते वे उसी भिखारिन वाली तस्वीर के सामने आ पहुँचे। चित्रा ने कहा, "यही वह तस्वीर है रूनी! जिसने मुझे इतनी प्रसिद्धि दी।"

"ये बच्चे रो क्यों रहे हैं मौसी?" तस्वीर को ध्यान से देखकर बालिका ने पूछा।

"इनकी माँ मर गई है। देखती नहीं, मरी पड़ी है। इतना भी नहीं समझती।" बालक ने मौका पाते ही अपने बड़प्पन और ज्ञान की छाप लगाई।

बच्चों ने क्या फरमाइश की?

"ये सचमुच के बच्चे थे, मौसी?" बालिका का स्वर करुण-से-करुणतर होता जा रहा था।

"अरे, सचमुच के बच्चों को देखकर ही तो बनायी थी यह तस्वीर।"

"मौसी, हमें ऐसी तस्वीर नहीं, अच्छी-अच्छी तस्वीरें दिखाओ, राजा-रानी की, परियों की।"

उन तस्वीरों को और अधिक देर तक देखना बच्चों के लिए असह्य हो उठा था। तभी अरुणा के पति आ पहुँचे। साधारण बातचीत के पश्चात् अरुणा ने दोनों बच्चों को उनके हवाले करते हुए कहा, "आप जरा बच्चों को प्रदर्शनी दिखाइए, मैं चित्रा को लेकर घर चलती हूँ।"

बच्चे इच्छा न रहते हुए भी पिता के साथ विदा हुए। चित्रा को दोनों बच्चे बड़े ही प्यारे लगे। वह उन्हें देखती रही। जैसे ही वे आँखों से ओझल हुए उसने पूछा, "सच-सच बता रूनी, ये प्यारे-प्यारे बच्चे किसके हैं?"

"कहा तो, मेरे!" अरुणा ने हँसते हुए कहा।

बच्चे कौन-सी तस्वीरें देखना चाहते थे?

2. **निम्नलिखित प्रश्नों के उत्तर लिखिए–**

(क) अरुणा और चित्रा का क्या सम्बन्ध था?

(ख) अरुणा किस प्रकार के कार्यक्रमों में व्यस्त रहती थी?

(ग) चित्रा और अरुणा में क्या-क्या समानताएँ और विषमताएँ थीं? HOTS

(घ) चित्रा के विदेश जाने का उद्देश्य क्या था?

(ङ) चित्रा के किस चित्र की अत्यधिक सराहना हुई? उसकी प्रेरणा उसे कहाँ से मिली?

(च) जब चित्रा विदेश जा रही थी, अरुणा उससे मिलने क्यों नहीं आई? HOTS

(छ) चित्रा और अरुणा में से आप किसे महान कलाकार मानते हैं और क्यों? HOTS

3. **इन उक्तियों का आशय स्पष्ट करते हुए लिखिए कि कौन किससे कह रहा है?**

(क) बिना मतलब जिन्दगी खराब कर रही है। ..... ने ..... से

(ख) किस काम की ऐसी कला जो आदमी को आदमी न रहने दे। ..... ने ..... से

(ग) जाने क्या था उस सारे दृश्य में कि मैं अपने को रोक न सकी। ..... ने ..... से

(घ) ये सचमुच के बच्चे थे, मौसी ? ..... ने ..... से

4. **सही उत्तर पर सही (✓) का चिह्न लगाइए–**

(क) चित्रा ने क्या दिखाने के लिए अरुणा को झकझोरकर उठा दिया?

(i) अपना फोटो ☐ (ii) नया चित्र ☑ (iii) सुहावना मौसम ☐

(ख) "क्या ये बन्दर पाल रखे हैं तूने"— इसमें बन्दर शब्द किनके लिए प्रयुक्त हुआ है?

(i) बन्दर के बच्चे ☐ (ii) शैतान बच्चे ☐ (iii) बस्ती के गरीब बच्चे ☑

(ग) "आखिर क्या हो गया ऐसा, जो ..... ही पड़ा, सुनें तो।"

(i) रुकना ☑ (ii) भागना ☐ (iii) झगड़ना ☐

(घ) चित्रों की प्रदर्शनी के दौरान अरुणा के साथ मिलने वाले दो बच्चे कौन थे?

(i) अरुणा के ☐ (ii) अरुणा की बस्ती के ☐ (iii) भिखारिन वाले चित्र के ☑

गद्यांश से Questions relating Paragraph

निम्नलिखित गद्यांश को ध्यानपूर्वक पढ़ते हुए पूछे गए प्रश्नों के उत्तर लिखिए–

तीन दिनों से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। रोज अखबारों में बाढ़ की खबरें आती थीं। बाढ़पीड़ितों की दशा बिगड़ती जा रही थी और वर्षा थी कि थमने का नाम नहीं लेती थी। अरुणा सारा दिन चन्दा इकट्ठा करने में व्यस्त रहती। एक दिन आखिर चित्रा ने कह दिया, "तेरे इम्तिहान सिर पर आ रहे हैं, कुछ पढ़ती-लिखती है नहीं, सारा दिन बस भटकती रहती है। माता-पिता क्या सोचेंगे कि इतना पैसा बेकार ही पानी में बहाया।"

"आज शाम को स्वयंसेवकों का एक दल जा रहा है, प्रिंसिपल से अनुमति ले ली है। मैं भी उसके साथ ही जा रही हूँ।" चित्रा की बात को बिना सुने उसने कहा।

(क) स्वयंसेवकों का दल कहाँ जा रहा था?

(ख) रोज ..... में बाढ़ की खबरें आती थीं।

(ग) सात दिनों से मूसलाधार वर्षा हो रही थी। सही/गलत